मैं मैं करता रात का अमल, कह्या गैर हक था नाबूद।
सूर ऊगे मारफत सब मिले, हुआ सबों मकसूद।। ४५ ।।

अन्धकार में चलने वाले सभी धर्म, पन्थ, पैंडे झूठे और नाचीज थे। मारफत के ज्ञान का सूर्य उदय होने से अब सब मिलकर प्राणनाथजी के पास आ रहे हैं और सबकी इच्छाएं पूरी की जा रही हैं।

मोमिन नजीकी हक के, जाको हकें दई विलायत।
नूर पार जाको वतन, करें आखिर अदालत।। ४६ ।।

मोमिन (रूहें) खुदा के नजदीकी कहे जाते हैं। इनको श्री राजजी महाराज ने परमधाम दे रखा है। जिनका घर अक्षर के पार परमधाम है, वही सच्चा न्याय अन्त में करेंगे।

विलायत दई हकें इनको, यासों चीज पाइए इसलाम।
तो हिजाब न आड़े वजूद, हिजाब न आड़े काम।। ४७ ।।

श्री राजजी महाराज ने इन मोमिनों को ही परमधाम (विलायत) के अखण्ड सुख दे रहे हैं, इसलिए सच्चे दीन (धर्म) की बातें इनसे ही मिलेंगी। इनके शरीर और काम करने के तरीकों में खुदा के बीच कोई परदा नहीं रह जाएगा।

हिजाब न रह्या बीच फकीरी, ऐसा हक इलम बेसक।
यों नजीक खुदाए के, अदल कजा करे हक।। ४८ ।।

मोमिन ऐसे फकीर होंगे कि जागृत बुद्धि की वाणी से निःसन्देह होकर इनके और खुदा के बीच परदा नहीं होगा। इस तरह से खुदा के नजदीकी होने से सबको सच्चा न्याय देंगे।

महामत कजा अदल, करे रसूल तीन सूरत।
बसरिएं मांग्या जिदनी इलम, कजा हकी सूरत जुबां कयामत।। ४९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मुहम्मद साहब की तीन सूरतें ही बसरी, मलकी और हकी दुनियां को सच्चा न्याय देंगी। बसरी सूरत ने तो वास्तविक संसार का न्याय किया और हकी सूरत के ज्ञान से सारी दुनियां का न्याय कर सब को अखण्ड मुक्ति मिली।

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ ४७७ ॥

बाब फितनेका

मांगी रसूलें रेहेमत, जिमी स्याम इमन।
तब अर्ज करी आरबों, नबी दिया न जवाब तिन।। १ ।।

रसूल साहब ने अल्ला ताला से विनती की कि स्याम इमन (भारतवर्ष) की जमीन पर कृपा करना। तब अरब के लोगों ने रसूल साहब से विनती की, जिसका उत्तर रसूल साहब ने कोई नहीं दिया।

फेर मांगी रसूलें रेहेमत, जिमी स्याम इमन को।
तब फेर अर्ज करी आरबों, क्या है बरारबमों।। २ ।।

रसूल साहब ने दुबारा स्याम इमन (भारत) के रहने वालों के लिए खुदा से कृपा मांगी। तब अरब के रहने वालों ने विनती की, हे रसूल साहब! अरब में क्या है?

Nijanand App

तब फुरमाया रसूल ने, है फितना सोर तुम माहें।
स्याम इमन जिमी बचोगे, और खैर काहूं नाहें।। ३ ।।

तब रसूल साहब ने फरमाया कि तुम्हारे बीच झगड़ा-फसाद होने वाला है। भारतवर्ष में ही जाकर बचोगे और कहीं ठिकाना नहीं है।

सोए देखोगे जाहेर, मेरे पीछे बीच करन।
सोई पातसाही यारों की, होसी फितना बीच खलीफन।। ४ ।।

मेरे जाने के बाद यहां अंधेरा छा जाएगा। मेरे जाने के बाद गादी के लिए, यारों में बादशाही के वास्ते झगड़े होंगे।

रसूल खड़े टेकरी पर, कह्या देखत यारो तुम।
कह्या हक जानें या रसूल, जानत नाहीं हम।। ५ ।।

रसूल साहब टेकरी (टीला) पर खड़े थे। उन्होंने यारों से पूछा कि तुम क्या देख रहे हो? यारों ने उत्तर दिया कि खुदा जानता है या आप जानते हैं। हम नहीं जानते।

तब कह्या रसूलें हदीसमें, ए जो सैतान का फितना।
सो आवत बीच बरारब, मैं देखत हों इतना।। ६ ।।

तब रसूल साहब ने हदीस में कहा कि यह शैतान अबलीस का झगड़ा-फसाद अरब में आ रहा है। मैं इतना देख रहा हूं।

आवेगा बरसात ज्यों, छोड़े ना कोई घर।
मैं केहेता हों तुम देखियो, ऐसा होसी मुझ बिगर।। ७ ।।

वह झगड़ा-फसाद बरसात की तरह आएगा। कोई घर इससे बचेगा नहीं। मेरे जाने के बाद ऐसा ही होगा, जिसे तुम देखना।

कह्या मेरी उमतमें, उठेगी तरवार।
सो रेहेसी लग आखिर, ऐसा होसी बखत ख्वार।। ८ ।।

मेरे मानने वालों में ही तलवारें चलेंगी। ऐसा दुष्ट समय आ जाएगा। वह वक्त आखिरत तक जब तक इमाम मेंहेंदी नहीं आते, यह झगड़ा चलता ही रहेगा।

और कह्या बीच हदीस के, मेरे पीछे होसी इमाम।
मैं डरता हों तिन से, गुम करसी गिरो तमाम।। ९ ।।

रसूल साहब ने हदीस में कहा कि मेरे जाने के बाद धर्म के चलाने वाले अगुए सबको रास्ते से भटका देंगे। मुझे उनसे बहुत डर लगता है।

दुनियां भी ऐसी होएसी, दिल अबलीस सैतान।
वजूद होसी आदमी, दिल कहूं न पाइए ईमान।। १० ।।

सारी दुनियां के दिलों पर शैतान अबलीस की बादशाही हो जाएगी। उनके तन तो आदमी जैसे होंगे, परन्तु किसी के अन्दर ईमान नहीं होगा।

Nijanand App

नाम मेरा चलावसी, कहेंगे तरीका महंमद।
सुंनत जमात कौल तोड़ के, जुदे पड़सी कर जिद।। ११ ।।

वह कहेंगे कि मुहम्मद साहब ने यही तरीका चलाया है। मेरे नाम से इमामत करेंगे। सुनकर ईमान लाने वाले लोग मेरे यार मेरे वचनों से हटकर और लड़-झगड़कर अलग हो जाएंगे।

केहेसी हम सुंनत जमात हैं, राह छोड़सी बीच की असल।
मेरा तरीका छोड़ के, चलसी अपनी अकल।। १२ ।।

सभी कहेंगे हम ही सुन्नत जमात हैं। सभी असली रास्ते (मेरे तरीके) को छोड़ देंगे और अपनी अक्ल से चलेंगे।

जब हुए हिजाबमें रसूल, तबहीं खतरा पड़या बीच यार।
तबहीं आया बीच फितना, पड़ी जुदागी बीच चार।। १३ ।।

जब रसूल साहब परदे में हुए (तन छोड़ा), तभी चारों यारों में झगड़ा पड़ गया (अली, अबूबक्र, उमर, उस्मान)। अपनी-अपनी बुजरकी का झगड़ा हुआ जिससे अलग-अलग हो गए।

सफर बखत रसूल के, तीन हुए न खबरदार।
बखत गए आए खड़े, लगे करने और विचार।। १४ ।।

रसूल साहब के चलने के समय में (तन छोड़ने के वक्त) अबूबक्र, उमर और उस्मान सावचेत (सावधान) नहीं हुए। उनके जाने के बाद आकर खड़े हो गए और खलीफा बनने के लिए विचार करने लगे।

अली आए खड़ा कबर पर, काढ़ के जुल्फिकार।
कह्या न छोड़ोंगा किनको, आइयो होए हुसियार।। १५ ।।

अली रसूल साहब की कब्र पर तलवार लेकर खड़ा हो गया और बोला, सावधान होकर आना। किसी को जिन्दा नहीं छोड़ूंगा।

तब चारों अपने हुए, हुआ फितना बीच जोर।
सफर पीछे रसूल के, दिन दिन बाढ़या सोर।। १६ ।।

रसूल साहब के जाने के बाद चारों यारों में जोरदार झगड़ा बढ़ गया, जो दिनों दिन बढ़ता ही गया।

अब देखो दिल विचार के, कैसा बीच पड़या इनमें।
ऐसी दुनी दोस्ती भी ना करे, जैसी हुई जमात से।। १७ ।।

अब दिल से विचार करके देखो। एक रसूल के यारों में ही कैसा झंझट हो गया। संसार के दोस्त भी ऐसा नहीं करते, जैसे रसूल साहब के यारों ने किया।

तीन यारों के जुदे हुए, करके बीच करार।
हमहीं सुंनत जमात हैं, खासी उमत खासे यार।। १८ ।।

अबूबक्र, उमर और उस्मान ने शान्त होकर अपने अलग-अलग फिरके कायम कर लिए। सभी कहते हैं कि हमारी सुन्नत जमात है और हम ही रसूल साहब के सच्चे यार हैं।

Nijanand App

इतथें अली के जुदे हुए, बैठ फितने किया पसार।
कई हुइयां लडाइयां जमातसे, कई कतल किए तरवार।। १९ ।।

यहां से अली के मानने वाले जुदा हो गए। उनकी जमात में शैतान ने इतना झगड़ा फैला दिया जिससे कई लड़ाइयां हुईं और वह तलवार से कत्ल हुए।

लेने को बुजरकियां, जमात मारी समसेर।
मारे मराए यार अस्हाबों, ऐसा फितने किया अंधेर।। २० ।।

समाज में साहेबी लेने के वास्ते सभी ने अपनी ही जमात को मारा। शैतान ने सबके दिलों में बैठकर अपने ही लोगों को मरवाकर अंधेरा फैला दिया।

कोई न छोड़या घर आरब, बीच फितना हुआ सब में।
कह्या हदीसों सोई हुआ, सबुर न किया किननें।। २१ ।।

घर-घर में सबके अन्दर अरब में झगड़ा-फसाद फैल गया। अरब का कोई भी घर झगड़े से नहीं बचा। मुहम्मद साहब ने जो हदीसों में कहा था वही हुआ। साहिबी के वास्ते किसी ने सन्तोष नहीं किया।

ए सब फुरमाया हुआ, देखो आयतों हदीसों विचार।
सो आए सदी लग आखिरी, आई किबले से पुकार।। २२ ।।

रसूल साहब ने जो फरमाया था, वह आयतों और हदीसों में विचार करके देखो। यह झगड़ा आखिरी वक्त तक चला। अब मक्का से वसीयतनामे आकर इस बात की साक्षी देते हैं।

ए नीके दिल विचारियो, माएना हदीसों आखिरत।
फसल आई असों भिस्तों की, हुआ दिन हक बका मारफत।। २३ ।।

हदीसों के आखिर के यह वचन अच्छी तरह से विचार कर देखना। अब श्री राजजी महाराज के अखण्ड ज्ञान का सूर्य उदय हुआ है। मोमिनों को परमधाम, ईश्वरीसृष्टि को अक्षरधाम और जीवसृष्टि को बहिश्तों में कायम होने का समय आया है।

महामत कहे ए मोमिनों, कही फितने की हकीकत।
अब कहूं सातों निसान, जिन पर मुद्दा कयामत।। २४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! मैंने तुमको झगड़े की हकीकत बताई है। अब कयामत के बड़े सात निशानों का विवरण करती हूं, जिनसे संसार को कायमी मिलनी है।

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ ५०१ ॥

बाब चारों निसानका-दाभतूलअर्जका निसान

आए लिखे बड़ी दरगाह से, इसलाम के खलीफों पर।
उठी बरकत मुसाफ सफकत, दुनी हुई ईमान बिगर।। १ ।।

बड़ी दरगाह (मक्का मदीने) से इस्लाम के मालिक औरंगजेब और काजी पर वसीयतनामे लिखकर आए कि मक्का से बरकत उठ गई, क़रान उठ गया, फकीरों की दुआएं उठ गईं और यहां से नूरी झण्डा (ईमान) उठ गया।

Nijanand App